Class - B.Com I

Subject - B.M.C (S)

Paper - I

Topic - Management

Lecture Sequence 2

Prepared by -

Dr Chandreshwar Prasad Sahu

Assistant Professor

Department of Commerce

Marwari College, Darbhanga

Email - cpsahu5161@gmail.com

प्रबन्ध :-

कंपनी, उद्योग एवं व्यवसाय स्थापित करने के बाद प्रवर्तकों के सामने महत्वपूर्ण समस्या प्रबन्ध की आयी। मानव समाज के सभी क्रियाएं चाहे वे आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक अथवा शैक्षणिक ही क्यों न हो प्रबन्ध इन सभी को संचालन के लिए अपना महत्वपूर्ण भूमिका देता है। आज के प्रतियोगिता बजार में प्रबन्ध एक जीवनदायनी तत्व माना जाता है क्योंकि इसके बिना उत्पादन के साधन (भूमि, श्रम, पूँजी, यंत्र इत्यादि) केवल साधन मात्र ही रह जाते हैं उत्पादक नहीं बन पाते। प्रबन्ध जहाँ है वहां व्यवस्था, अनुशासन, दक्षता, मितव्ययी कार्य एवं सौन्दर्य के दर्शन होते हैं। प्रबन्ध के अभाव में अव्यवस्था, कुशासन, अकुशलता, अपव्यय तथा गंदगी ही दिखाई देती है।

उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए केवल साधनों को इकट्ठा कर लेना पर्याप्त नहीं है बल्कि योजना बनाना, विभिन्न व्यक्तियों के प्रयास द्वारा इन साधनों का कुशलता तथा मितव्ययी प्रयोग करना भी आवश्यक है और यह कार्य केवल एक कुशल प्रबन्धक द्वारा ही किया जा सकता है।

प्रबन्ध एक शक्ति है जो किसी व्यवसाय को संचालित करती है तथा उसकी सफलता तथा असफलता के लिए उत्तरदायी होता है। एक सामाजिक प्रक्रिया है जो किसी व्यावसायिक संगठन के निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए मानवीय तथा गैर मानवीय साधनों

का नियोजन, संगठन, समन्वय, निर्देशन एवं नियंत्रण करती है। मिलकर काम करने से सभी सामाजिक क्रियाओं की सफलता में प्रबन्ध का बहुत ही बड़ा योगदान है।

विभिन्न विद्वानों प्रबन्ध को समझने तथा समझाने का प्रयास किया है। अर्थशास्त्री प्रबन्ध को उत्पादन का एक तत्व मानते हैं जबकि समाजशास्त्रियों को इसे एक वर्ग या व्यक्तियों का समूह मानते हैं। प्रबन्धशास्त्रियों के अनुसार - प्रबन्ध एक प्रक्रिया है तथा इसे एक शास्त्र या अध्ययन के क्षेत्र के रूप में देखते हैं। प्रबन्ध दूसरे व्यक्तियों से कार्य करवाने की तरीका है।

प्रबन्धक एक कला एवं विज्ञान है जो निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विभिन्न मानवीय प्रयासों से संबंध रखता है। प्रबन्ध को कार्यों के निष्पादन की एक प्रक्रिया तथा मानव के विकास का आधार माना जाता है।

व्यावसायिक संगठन के छः प्रमुख तत्व हैं - कर्मचारी, मशीन, माल, मुद्रा बाजार एवं प्रबंध

इस प्रकार प्रबन्ध एक प्रक्रिया है जिसमें काम को कुशल एवं प्रभावी ढंग से करने के लिए कार्यों के एक समूह को सम्पन्न किया जाता है।

प्रबन्ध को और स्पष्ट करने के लिए इनकी परिभाषाओं पर ध्यान देना आवश्यक होगा -

F.W. Taylor - "प्रबन्ध यह जानने की कला है कि आप व्यक्तियों से क्या करवाना चाहते हैं उसके बाद यह देखना कि वे उसे सर्वोत्तम एवं मितव्ययितापूर्ण विधि से करते हैं।"

John F. Mee – "प्रबन्ध से तात्पर्य न्यूनतम प्रयास द्वारा अधिकतम परिणाम प्राप्त करने की कला है जिसमें नियोक्ता तथा कर्मचारी दोनों के लिए अधिकतम समृद्धि एवं खुशहाली प्राप्त की जा सके, एवं जनता को सर्वश्रेष्ठ सेवा प्रदान की जा सके।"

R. Terry – "प्रबन्ध नियोजन, संगठन, उत्प्रेरण एवं नियंत्रण की एक विशिष्ट प्रक्रिया है जिसमें मानव एवं अन्य साधनों का प्रयोग करते हुए निश्चित उद्देश्यों का निर्धारण एवं पूर्ति करने के लिए कार्य किया जाता है।"

Fayol – "प्रबन्ध से आशय पूर्वानुमान लगाना एवं योजना बनाना, संगठन करना, आदेश देना, समन्वय करना तथा नियंत्रण करना है।"

Moore – "प्रबन्ध का तात्पर्य निर्णय लेना है।"

Albanese – "प्रबन्ध वातावरण के निर्माण एवं अनुरक्षण का कार्य है जिसमें व्यक्ति लक्ष्यों को दक्षतापूर्ण एवं प्रभावशाली ढंग से पूरा करते हैं।"

Renold – "प्रबन्ध किसी समुदाय की एक एजेन्सी द्वारा कार्य कराने की प्रक्रिया है।"

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि प्रबन्ध कर्मचारियों से कार्य लेने की प्रक्रिया ही नहीं बल्कि उनके साथ कार्य करने की प्रक्रिया भी है। जिससे कर्मचारी संगठित होकर अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हमेशा प्रयास करते रहें।